प्रश्न — अर्थ परिवर्तनक कारण पर संक्षेपमे प्रकाश दिअ।

भाषाक अध्ययनक पश्चात ई सहजहि कहल जा सकैत अछि जे अर्थमे सदैव परिवर्तन होइत रहैत अछि। भोलानाथ तिवारी अर्थक परिभाषा दैत कहैत छथि "कोनो भाषिक इकाईकेँ कोनो इन्द्रियसँ ग्रहण कयला पर जे मानसिक प्रतीति होइत अछि वएह अर्थ अछि।" अर्थक एहि परिभाषाक पश्चात कहल जा सकैत अछि जे जाहि प्रकारसँ ध्वनि पद वाक्य आ कोनो भाषाक शब्द भण्डारमे परिवर्तन होइत अछि ओहि प्रकारसँ अर्थ परिवर्तन होइत रहैत अछि। एकरे हम अर्थ परिवर्तन वा अर्थ विकासक संज्ञासँ अभिहित करैत छी।

मानवक स्थिति सदैव परिवर्तनशील रहैत अछि आ अर्थक सम्बन्ध कोनो ने कोनो रूपमे मानव मनसँ अछि। दोसर अर्थमे कहल जा सकैत अछि जे "अर्थ प्रयोक्ताक मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाक सेहो प्रतिफल अछि।" स्थूल रूपमे अर्थ विकास वा परिवर्तनक किछु कारण गनाओल गेल अछि जाहिमे 11 गोट कारण मुख्य मानल गेल अछि। मुदा वर्तमानमे अर्थ परिवर्तनक 18 गोट कारण मानल जाइत अछि—

(1) लाक्षणिक प्रयोग — लाक्षणिक प्रयोगकेँ अलंकारिक प्रयोग सेहो कहल जा सकैत अछि। मुहावरा एहि प्रयोगकेँ जन्म दैत अछि आ अर्थमे परिवर्तन करैत अछि। भाषा वैज्ञानिक ब्रीलक कथनानुसार, अनेक कारण समूह अपेक्षा अलंकार प्रयोगसँ अर्थ एक क्षणमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि। भर्तृहरि सेहो एकर उल्लेख कयने छथि। मानवक अंगक सदृश अनेक निर्जीव वस्तु समक लेल सेहो अंगवाची शब्द समक प्रयोग कयल जाइत अछि, यथा — नावक पेट, पतंगक पेट आलूक आँखि, छन्दक चरण आ पद। एहि रूपसँ मधुर संगीत, तीत बात, मीठ बात, कटु

(2)

अनुभव बकलेल लोक आदिमे लाक्षणिकता स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होमत अछि।

२. परिवेशक परिवर्तन —

वातावरण परिवर्तन भए गेलाक कारण सेहो अर्थक परिवर्तन भए जाइत अछि। ई परिवर्तन तीन क्षेत्रमे दृष्टिगत होइत अछि (क) भौगोलिक (ख) सामाजिक (ग) भौतिक।

उदाहरण स्वरूप भौगोलिक कारण — यथा, तारपोरवालाक मतक अनुसार वेदमे उष्ट्रक अर्थ महिष छल। मुदा बादमे जखन आर्य लोकनि ऊँट रहैत छल, ओतय पहुँचल त ऊँट के देखि ओकर अर्थ ऊँट कएलक। एहि रूपसँ Corn शब्दक अर्थ अंग्रेजीक हेतु गहूम, स्कॉचक हेतु बाजरा आ अमेरिकाक हेतु मकई अछि। शब्द एक अछि मुदा भौगोलिक स्थान भेलें ओकर तीन अर्थ प्रचलित भए गेल। एहि प्रकारें सामाजिक परिवेशक कारण सेहो अर्थमे परिवर्तन होइत अछि, यथा — अंग्रेजीमे Mother क अर्थ माय अछि आ Sister क अर्थ बहिन। मुदा एकर अर्थ गिरजाघरमे किछु आरो भए जाइत अछि। एहि क्रमसँ बेटाक सम्बोधन कएलासँ मायक अर्थ माय होइत अछि मुदा कोनो पुरुष जखन अपन पतिक मायके माय कहैत अछि तखन ओ सासुक अर्थमे प्रयुक्त भए जाइत अछि।

एहि क्रममे भौतिक कारणसँ सेहो अर्थमे परिवर्तन भए जाइत अछि। लोकक जेना-जेना भौतिक उन्नति होमत अछि तेना-तेना वस्तुक नामक सेहो परिवर्तन स्वाभाविक ढंगसँ होमय लगैत अछि। यथा — अंग्रेजीक ग्लासक प्रयोग शीशाक ग्लासक हेतु प्रारम्भ भेल छल। मुदा धनीक लोक काँच चानी आदिक हेतु सेहो ग्लासक प्रयोग करैत छथि।

Scanned with CamScanner

3. विनम्रता प्रदर्शन —

चारिके अन्तर्गत विनम्रता आसामाजिक शिष्टा- सर्वप्रथम मात्रा मे होमत अछि। ओकर प्रदर्शन आ किछु पर पूछत छी त कहैत छी चैक "सरकार दिलत खाला कतय छथि।" मुदा जखन हम अपना घरक पता दैत छियैक तँ कहैत छियैक जे "खाक सारके गरीब खाना कहल जाइत अछि"। एहि प्रकार से राजाक हेतु 'अन्न दाता', 'धर्मावतार आलमपनाह, जहाँपनाह' आदि शब्दक प्रयोग मे आनल जाइत अछि। एहिसँ स्पष्ट अछि जे शब्द सभक अर्थ विनम्रता प्रदर्शनिसे सेहो परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

4. सुकाव्यता —

सुकाव्यताक अर्थ होमत अछि जे सुनवमे बढ़िया लागए। सुव्यताक लाते जखन जे चाही से बाजी से वृद्धि होमत अछि। एहि हेतु अवसर पर ध्यान राखए पड़ैत छैक। प्रायः अशुभ सूचक बात सभ बच्चायके गोलमटोल शब्द मे प्रकट कएल जाइत अछि यथा विधवाक हेतु चूड़ी फूटब कहैत छी। मरि- गेलिहाक हेतु स्वर्गवास भए जाएब अथवा पंचतत्वक प्राप्त करब कहल जाइत अछि। एहि रूपसँ रातिमे साँपके देखि लोक कहैत अछि जे रस्सी छलैक।

5. व्यंग्य —

ई अंग्रेजीक आयरनीक पर्याय अछि। मुदा आइ एकर अर्थ व्यंग्यक रूप मे लेल जाइत अछि। लोक कंजूसके दाताकर्ण, कुरूपके कामदेव, अन्यायीके धर्मराज, आन्हरके नयनसुख आदि व्यंग्य मे कहैत अछि।

6. भावात्मक बल —

(५)

भाषाक भावात्मक प्रयोग सेहो होइत अछि। भावात्मक बल देलासँ सेहो अर्थमे परिवर्तन भए जाइत अछि यथा - राम-राम ! एना किएक कएलहुँ। एहि वाक्यमे राम-राम धिक्कार बोधक थिक।

७. सामान्यक लेल विशेषक प्रयोग :-

वस्तुतः अर्थ विस्तारक एक गोट रूप थिक। कखनहुँ-कखनहु सम्पूर्ण वर्ग हेतु ओहि वर्गक वस्तुक प्रयोग कएल जाइत अछि यथा - स्याहि शब्द स्याहसँ बनल अछि, ओकर प्रयोग कारी रोशनाइ हेतु होइत अछि। मुदा स्याहीक प्रयोग मात्र कारी रोशनाइक हेतु नहि बल्कि कोनो रंगक रोशनाइक स्याहीक लेल प्रयुक्त होइत अछि।

८. अज्ञान अथवा भ्रान्ति -:

अज्ञानता अथवा भ्रमवश कोनो प्रयोग कएलासँ अर्थमे परिवर्तन भए जाइत अछि लोकभाषामे एहन उदाहरण अनेक भेटैत अछि। यथा -: भोजपुरीमे 'कलंक' हेतु 'अकलंक' फजूलक हेतु बेफजूल, गुजरातीमे ठीक ओहिना मैथिलीमे सेहो बेफजूल शब्द प्रचलित भए गेल अछि।

९. शब्दार्थक ~~अनिश्चित~~ अन्तर्निहित अनिश्चितता ——

कोनो भाषामे एहन शब्द बहुत होइत अछि जकर अर्थ सुनिश्चित नहि होइत अछि। अमूर्त भावक वाचक शब्द प्रायः एहि ~~कोटि~~ कोटिमे अबैत अछि, यथा -: अनुकम्पा कृपा आ दयामे भेद करब कठिन अछि। एहिना अभ्युदय, उन्नति, विकास प्रगति आदि शब्द सेहो अर्थक दृष्टिएँ बहुत स्पष्ट नहि अछि। एकर कारणे भिन्न-भिन्न प्रयोक्ता सभक द्वारा प्रयोगमे सेहो भिन्नता आबि जाइत अछि।

Scanned with CamScanner

10. व्यक्तिक अनुसार शब्दक प्रत्ययमे भेद –

व्यक्तिगत संस्कार, परिवेश शिक्षा, जीवन प्रणाली आदिक भेद सँ शब्द मे जे प्रत्यय मनमे उत्पन्न होइत अछि, ओहो भिन्न होइत अछि। धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य नीक-अधलाइ, खाद्य-अखाद्यक कोनो एकटा कसौटी नहि अछि। धर्म शब्द हिन्दू, मुसलमान आ इसाइक हृदयमे विभिन्न प्रकारक भावनाक जन्म दैत अछि।

11. शब्दार्थक एक तत्वक प्रमुखता –

कखनहुँ-कखनहुँ शब्दक सम्पूर्ण अर्थके ध्यान मे नहि राखिके ओकर कोनो एक तत्वके प्रधानता दए प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा – पुलिसक हेतु 'लाल पगड़ी' एवं काँग्रेसक हेतु 'गाँधी टोपी' प्रचलित अछि।

12. साहचर्यक कारण गौण अर्थक प्रमुखता –

वस्तुतः एहिमे अर्थादेश होइत अछि। यथा – सिन्धुक अर्थ पैघ नदी वा समुद्र छल आर्य पंजाबक एक पैघ नदीके सिन्धु कहलन्हि। कालान्तर मे नदीक समीपवर्ती जमीन सेहो सिन्धु कहए लागल।

13. ध्वनि विशेष –

ध्वनि विशेष पर सेहो बल देलासँ अर्थ मे परिवर्तन होइत अछि, यथा वेद मे 'अरि' शब्द शत्रु, धार, ईश्वर आ धार्मिक अर्थक सूचक अछि। मुदा आइ 'अरि' शब्द मात्र शत्रु वाचक अछि।

14. अनुकरणक अपूर्णता –

मानव अनुकरण प्रिय होइत अछि मुदा अनुकरण अधिकतर पूर्ण नहि होइत अछि। अतएव

Scanned with CamScanner

अर्थमे क्रमशः अन्तर भए जाइत अछि, यथा- 'पत्र' शब्द पोथीक पन्ना आ चिट्ठी आदिक हेतु प्रयुक्त अछि।

15. अन्य भाषाक शब्द —:

एक भाषा जखन दोसर भाषाक शब्दके प्रयोग करैत अछि तखन ओकर अर्थमे परिवर्तन भए जाइत अछि। यथा- संस्कृत मे 'वाटिका' शब्द उद्यानक अर्थमे प्रयुक्त अछि, मुदा बंगला मे एहि शब्दक अर्थ घर अछि।

16. नामकरण —:

लोकक सीमा सीमित छैक अतः ओ परिचित वस्तु सभक आधार पर कोनो नव वस्तुक नाम रखैत अछि। एहि हेतु वस्तुक अर्थमे परिवर्तन भए जाइत अछि, यथा- वेद मे सोमक बहुत प्रयोग अछि, मुदा ओ अप्राप्य छल। अतएव, एक तृण विशेष- 'प्रतीक तृण' के सोम कहल जाइत छल। एहि रूपमे आइ अनेक वस्तुक नाम पुरान अछि मुदा अर्थ नव अछि, यथा - चौबीस मिनटक समयके घड़ी कहल जाइत छल। मुदा आइ समयसूचक यन्त्र घड़ी भए गेल अछि।

17. एक शब्दक भिन्न रूपक विभिन्न अर्थमे प्रयोग- एहन बहुत बेर देखल जाइत अछि जे कोनो शब्दक तत्सम आ तद्‌भव रूपमे अर्थक दृष्टिए भेद भए जाइत अछि। यथा— खाद्य तत्समक अर्थ खाद्य पदार्थ होइत अछि मुदा खाद्यक तद्‌भव शब्दक खादक अर्थ कृषिकर्ममे विशेष उपजा कराबयवला पदार्थक अर्थमे लेल जाइत अछि। क्षीरक अर्थ दूध अछि मुदा ओकर तद्‌भव रूप खीरके अर्थ दूध आ चाउरके बनल पदार्थ सँ होइत अछि।

Scanned with CamScanner

18. एक वर्गक शब्दमे अर्थक परिवर्तन —

एक वर्गक शब्दमे अर्थक परिवर्तन होइत अछि। यथा— 'दुहिता' शब्दक अर्थ पहिने गाय दुहयवाली छल, एकर कारण ई जे पहिने गाय दुहबाक काज बालिका करैत छलीह, मुदा बादमे ई शब्द बालिका वाचक भए गेल।

एतावता ज्ञात होइत अछि जे उपर्युक्त अनेक कारण सँ अर्थ परिवर्तन भए सकैत अछि, मुदा एहि रेखा सभकेँ सीमा रेखामे बान्हब सम्मत नहि अछि, किएक तँ कारण एतेक संश्लिष्ट होइछ जे ओकरा पृथक-पृथक निर्देश करब सम्भव नहि अछि।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक

Scanned with CamScanner